आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023
Received: 26/09/2023; Accepted: 21/10/2023; Published: 26/12/2023

हिंदी की शिक्षा में अनुसंधान का योगदान (महाविध्यालय के स्तर पर)

- डॉ. कविता वि चांदगुडे
सह प्राध्यापिका
किटेल कला महाविध्यालय

डॉ. कविता वि चांदगुडे, **हिंदी की शिक्षा में अनुसंधान का योगदान (महाविध्यालय के स्तर पर)**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 5/दिसंबर 2023,(464-467)

शिक्षा और अनुसंधान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशुवत होता है। अतः शिक्षा को भी मूलभूत आवश्यकताओं में एक माना जाता है। शिख्शा का अर्थ केवल ज्ञान अर्जित करना , उसके बल पर आजीविका को उपलब्ध कर जीवन निर्वहण करना नहीं वरन शिक्षा से व्यक्तित्व का विकास करना, जीवनमूल्यों का विकास करना, सर्वांगीण विकास करना है। एक स्वस्थ समाज और राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा प्रमुख पात्र निभाती है।शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन एवं परिवर्धन होता रहा है। इसके लिए अनुसंधान या शोध का योगदान कम नहीं है। शिक्षा के स्तर को विकसित करने, शिक्षा के नए क्षेत्रों को विकसित करने में अनुसंधान प्रमुख पात्र अदा करता है। इस्लिए उच्चशिक्षा में अनुसंधान को लागू करना लाभदायक होगा।

अनुसंधान का अंग्रेजी पर्याय रिसर्च (Research) है जिसका अर्थ 'पुनः खोजें', किंतु इसका सही अर्थ 'गहन खोज' है। अनुसंधान के द्वारा हम कुछ नया आविष्कृत कर उसे ज्ञान के परंपरा में जोडने का प्रयास करते हैं।शिक्षा के क्षेत्र में किए जानेवाले अनुसंधान को शैक्षिक अनुसंधान कहते हैं। महाविध्यालयों में भी अनुसंधान के अन्वय से शिक्षक एवं छात्र दोनों लाभान्वित होते हैं। उनमें नए-नए विषयों के अध्ययन के प्रति रुची जगती है। मनुष्य की मूल प्रवृत्ति जिज्ञासा को संतुष्टि प्रदान करती है। उन्हे विविध विष्ययों का गहन और सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इससे उनके ज्ञान का विस्तार होता है। उनके पूर्वाग्रहों में परिवर्तन सत्य की कसौटी पर होता है।साथ ही अनुसंधाताओं का बौद्दिक एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। अतः महाविध्यालयों में भी अनुसंधान / शोध के लिए प्रोस्ताहन देना आवश्यक है।

महाविध्यालयों में हिंदी के प्राध्यापक एवं छात्र अनुसंधान कार्य में जुडने से उन्हें उस विषय में अधिक ज्ञान एवं नवीन जानकारियाँ उपलब्ध होते हैं। अनुसंधान की दिशा में हमारे महाविध्यालयों में अनेक पद्दतियाँ प्रयोग में हैं। इन्हें हम छात्र और प्राध्यापक की दृष्टिकोण से देख सकते हैं।

छात्र अनुसंधान: छात्रों में हिंदी भाषा और साहित्य में अधिक अभिरुचि जागृत करने के लिए उन्हें संगोष्ठी, समूह चर्चा, परियोजना कार्य, क्षेत्र अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन, अनुवाद आदि कार्य दिए जाते हैं।इससे उनका अनुभव एवं ज्ञान का विस्तार होता है। पढने एवं लिखने के कौशलों का विकास होता है।

संगोष्ठी(सेमिनार): छात्रों को किसी एक विषय पर प्रपत्र तैयार कर प्रतुत करने का अवसर दिया जाता है। छात्र उस विषय से गुडे अनेक संदर्भ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं एवं संगोष्ठियों के आलेखों का विषद रुप से अध्ययन कर अपना प्रपत्र तैयार करते हैं।उसके प्रतुतिकरण के संदर्भ में चर्चा- विमर्शा होती है। इससे सामूहिक रूप से छात्र वर्ग उस विषय के संबध में अधिक गहन जानकारी हासिल करते हैं। उनमें और अधिक पढने एवं आलेखों को लिखने की क्षमता विकसित होती है। छात्रों के आलेखों का संपादन भी हिंदी विषय एवं साहित्य कोश के विकास में बढौतरी करेंगे।

परियोजना कार्य: परियोजना किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई एक पूर्ण योजना है। इसमें छात्रों को वयक्तिक या सामूहिक रुप से एक समस्या / लक्ष्य जैसे किसी साहित्यकार या कृति या व्याकरणिक विषय आदी दी जाती है। छात्र इसके अनुरूप पहले अपने कार्ययोजना का उद्देश निर्धारित करते हैं। उसके पश्चात उसकी प्रस्तावना तथा पृष्टभूमि तैयार करते हैं।उससे संबधित साहित्य का व्यापक सर्वेक्षण करते हैं। उसके आधार पर परिकल्पना का निर्माण करते हैं। परियोजना को समय में पूर्ण करने के उद्देश्य से निश्चित तिथि तय कर कार्य करते हैं। इसके लिए उचित संसाधनों को जैसे किताबें, समाचारपत्र तथा पत्रिकाएँ, कंप्यूटर तथा इंटरनेट, प्रश्नावली, प्रोफेसर या विशेषज्ञ के मर्गदर्शन, संदर्शन, परामर्श आदि द्वारा विषय संग्रहित करते हैं। उसके आधार पर अपना शोध प्रबंध तैयार करते हैं। परियोजना से छात्रों को अपार अनुभव मिलता है। उन्हें भविष्य में और अधिक अनुसंधान करने की प्रेरणा मिलती है।उनमें पढने की अभिरुची जगती है, उनमें आलोचक परिवीक्षक के कौशल भी विकसित होते हैं। लिखने का अभ्यास भी उनमें विकसित होता है। हिंदी साहित्य में भी नए शोधों की संख्या में वृद्दी होती है। साथ ही आगामी अनुसंधान के लिए द्वार भी खोल देती है।

तुलनत्मक अनुसंधान: तुलनात्मक अनुसंधान में दो या अधिक भाषा, साहित्य, संस्कृति, राष्ट्र आदि का तुलना करते हुए अध्ययन किया जाता है। छात्रों को हिंदी का अन्य भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्हें प्रमुख रचनाओं, साहित्यकारों, या कालखंड का तुलना द्वारा अध्ययन कर प्रपत्र प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है। इससे उनके ज्ञान का विस्तार होता है। एक साथ अन्य भाषाओं का गहन अद्ययन करना , उनका मूल्यांकन करने का अवसर छात्रों को मिलता है।

अनुवाद कार्य: छात्रों को अनुवाद के अभ्यास द्वारा भी शिक्षित करने का प्रयास किया जाता है। छात्र इसके माध्यम से अनेक भाषाओं का ज्ञान, साहित्य का परिचय एवं उन पर प्रभुत्व पाते हैं।

सर्वेक्षण अनुसंधान: सर्वेक्षण का अर्थ अवलोकन अथवा अन्वेषण करना होता है। इसका उद्धेश्य एक क्षेत्र की किसी एक स्थिति अथवा उसके प्रचलन के संबंध में यथार्थ सूचना प्रदान करना होता है। छात्रों को हिंदी में अधिक रुचि जगाने उन्हें उससे जुडे सर्वेक्षण करने दिया जाता है। जैसे हिंदी कार्यक्षेत्र का सर्वेक्षण, हिंदी द्वारा उध्योगावकाश की संभावनाएँ, प्रतिस्पर्धात्मक परिक्षार्थियों का सर्वेक्षण, हिंदी शिक्षकों की स्थितिगति आदि विषयों पर छात्र अध्ययन कर सकते हैं। जिससे उनमें हिंदी अध्ययन का महत्व, उसके माध्यम से भविष्य की तैयारी आदि का उत्साह उत्पन्न होती है।

क्षेत्र अनुसंधान: इसके माध्यम से भी छात्रों को अनुसंधान का अनुभव दिया जाता है। छात्रों को एक सामाजिक अथवा संस्थागत स्थिति का अवलोकन करने कहा जाता है। उससे संबंधित व्यिक्तयों, की अभिवृत्ति, मूल्यों , व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। हिंदी शिक्षा के प्रति संस्था एवं समाज का अभिमत, अभिभावक तथा छात्रों का अभिप्राय, विषय के संबंध में उनके मांग, परिवर्तन या परिवर्धन की आकांक्षाएँ आदि का क्षेत्र सर्वेक्षण, अध्ययन किया जाता है।इससे उनके पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन, वृत्ति शिक्षण के कौशलों आदि को विकसित करने में सहायक बनता है।

महाविध्यालयों में छात्रों को विभिन्न विधियों से हिंदी में अधिक अभ्यास कराया जाता है। इनसे उनमें अधिक ग्रंथों का अध्ययन करने की अभिरुचि जागृत होती है।उनमें कार्ययोजना बनाकर उसके अनुरुप कार्य करने की रुढी विकसित होती है। उनमें लेखन का कौशल एवं प्रवृत्ति भी विकसित होती है। उनमें उच्च शिक्षा प्राप्त कर अनुसंधान कार्य में जुडने की आकांक्षा जगती है। साथ ही हिंदी भाषा एवं साहित्य का विकास भी होता है।

प्राध्यापक अनुसंधान: प्राध्यापकों को निरंतर अध्ययन करना और अपने ज्ञान का विकास करना अनिवार्य है। अत: संगोष्ठियों में भाग लेना, प्रपत्र प्रस्तुत करना, आलेखों को प्रकाशित करना, अपने वृत्ति कौशलों को उन्नत करना अध्यापकों का कर्तव्य है। इस दिशा में अनुसंधान कार्य में संलग्न होना भी उनके लिए लाभदायक होगा। विश्विवध्यालय धनसहाय आयोग ने भी प्राध्यापकों को शोध कार्य में जोडने के लिए माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट और मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट योजनाओं को अयोजित किया है। कई प्राध्यापक इस योजना के तहत शोध कार्य को संपन्न किया है। कई संस्थाएँ भी अनुसंधान के लिए धन सहायता देकर प्राध्यापकों को इस दिशा में प्रेरित कर रहे हैं। प्राध्यापक शोध के लिए जैसे हिंदी व्याकरण , श्ब्दावली पारिभाषिक शब्दावली, हिंदी साहित्य का इतिहास,

हिंदी के प्रमुख साहित्यकार, हिंदी के श्रेष्ट रचनाएँ आदि। अनेकों ने तुलनात्मक एवं अनुवाद आदि कार्यों को लेकर शोध कार्य करते रहे हैं। उनके मौलिक कार्य, प्रयास से हिंदी की सेवा हो रही है।

अनुसंधान के कार्यों से प्राध्यापक अपने विषय में सतत ज्ञान वृद्दि करते रहेंगे। उनमें शोधालेख तैयार कर उन्हें प्रकाशित करने की प्रवृत्ति बढती है। इससे वे अपने विषय क्षेत्र में अमूल्य दोगदान देते हैं। हिंदी प्राध्यापक भी अनुसंधानों से न केवल अपना वयक्तिक विकास करते हैं वरन हिंदी भाषा एवं साहित्य को संपन्न करने की दिशा में प्रयत्नरत हैं।अनुसंधान से उनके अनुभवों की व्याप्ति बढती जाती है। उसका उपयोग वे अपने शिक्षा कार्य में कर छात्रों को विषय की गहराई तक ले जा सकते हैं। हिंदी जगत में होते नए विचारों, कार्यों का विषद जानकारी देकर उनमें हिंदी भाषा एवं साहित्य में जिज्ञासा को बढाकर उन्हें पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भी अधिक जानने पढने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। छात्रों को इस दिशा में अग्रसर करने अपने साथ-साथ उन्हें भी शोध कार्य में जोडने का कार्य करते हैं। छात्रों को सेमिनार, प्रोजेक्ट कार्य अनुवाद कार्य, सर्वेक्षण विधि, तुलनात्मक कार्य आदि में निरत कराते हैं। प्राध्यापक इनका प्रयोग स्वत: भी करते हैं और अपने छात्रों को भी इनमें प्रशिक्षित करते हैं। इससे प्राध्यापक एवं छात्र दोनों का विकास होता है। कई छात्र महाविध्यालय स्तर पर ही स्नातकोत्तर अध्ययन का निर्णय लेते हैं। आगामी दिनों में वे अनुसंधान से भी जोडते हैं।

हिंदी साहित्य में नए-नए शोध कार्य होने से उसका विकास तीव्र होने लगा है। अच्छे अनुसंधाता, अलोचक, विमर्शक, लेखकों की कोटि बढती जाएगी। अत: महाविध्यालयीय स्तर पर ही अनुसंधान को अन्वय करना प्राध्यापक, छात्र, समाज, राष्ट्र तथा विषय क्षेत्र की दृष्टी से लाभदायक ही होगा।

आधार ग्रंथ:

१.डॉ. एच.के.कपिल अनुसंधान विधियाँ हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक, आगरा,१९९६-९७

****